सी. आर. डी. ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियाँ, जिला - सीहोर (म. प्र.)

आकस्मिक कृषि आयोजना- 2017-18

फसल का नाम	सामान्य मौसम	देर से मानसून	सूखा/फसल अवस्था में सूखा
सोयाबीन	➢ किस्म जे. एस. 95–60, जे. एस. 93–05, जे. एस. 20 34, जे. एस. 2029, आर. वी. एस – 2001 – 04 ➢ बुवाई के समय नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश व सल्फर का उपयोग। ➢ सोयाबीन की मेंड में बुवाई। ➢ ट्राईकोडर्मा 5 ग्रा. या कार्बोक्सिन + थायरम 3 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा. बीज का उपचार। ➢ चक भृंग व सेमीलूपर कीट का समय से प्रबन्धन।	➢ किस्म जे. एस. 95–60, जे. एस. 2034। ➢ सोयाबीन की मेंड व नाली विधि या बी. बी. एफ. मशीन से बुवाई। ➢ 15 –25 प्रतिशत अधिक बीजदर। ➢ ट्राईकोडर्मा 5 ग्रा. या कार्बोक्सिन + थायरम 3 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा. बीज का उपचार। ➢ संकर मक्का या खरीफ प्याज के माध्यम से फसल प्रणाली मे परिवर्तन। ➢ समय से कीट – व्याधि प्रबन्धन।	➢ मेंढ नाली या बी. बी. एफ. मशीन से बुवाई। ➢ नियमित निंदाई – गुडाई के माध्यम से मृदा पलवार तैयार करना। ➢ खरपतवारों के माध्यम से इन सीटू पलवार। ➢ सेलिसिलिक एसिड 1 ग्रा. मात्रा/5 ली. पानी में घोलकर पर्णीय छिडकाव करें। ➢ चक भृंग कीट की रोकथाम हेतु ट्राईजोफॉस 40 ईसी की 400 मिली. मात्रा की प्रति एकड की दर से छिडकाव।
धान	➢ किस्म पी. बी. 1121 व पी. बी. 1 । ➢ धान की सीधी बुवाई या रोपाई। ➢ श्री पद्धति से धान लगाना। ➢ 20 प्रतिशत नत्रजन, पूरी फास्फोरस व पूरी पोटाश का बुवाई के समय उपयोग। ➢ पंक्ति में बुवाई या रोपाई।	➢ पी. बी. 1509 व सहभागी। ➢ जल्दी पौध की बढवार हेतु पूर्णतः पकी हुई कम्पोस्ट का उपयोग। ➢ 15 – 25 प्रतिशत अधिक बीज दर का उपयोग। ➢ संकर मक्का/खरीफ प्याज के माध्यम से फसल प्रणाली मे परिवर्तन।	➢ किस्म जे. आर. 201,सहभागी, इन्द्रा –2 व इन्द्रस –3। ➢ वर्षा होने पर नत्रजन धारी उर्वरक का पर्णीय छिडकाव। ➢ नियमित निंदाई – गुडाई । ➢ सेलिसिलिक एसिड 1 ग्रा. मात्रा/5 ली. पानी में घोलकर पर्णीय छिडकाव करें।
अरहर	➢ किस्म टी. टी. 401, टी. जे. टी. –501 आई. सी. पी. एल. – 88039। ➢ कार्बोक्सिन + थायरम 3 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा. बीज का उपचार। ➢ अरहर की मेंड में बुवाई। ➢ समय से पौध संरक्षण।	➢ किस्म आई. सी. पी. एल. 88039, आई. सी. पी. एल. 87। ➢ अरहर की मेंड में बुवाई। ➢ कार्बोक्सिन + थायरम 3 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा. बीज का उपचार। ➢ 15–25 प्रतिशत अधिक बीज दर का उपयोग।	➢ किस्म आई. सी. पी. एल. 87, टी.टी. – 401। ➢ नियमित अन्तराल में गुडाई कर मृदा पलवार तैयार करना। ➢ वाष्पोत्सर्जन किया को कम करने वाले रसायनों का छिडकाव। ➢ जल संरक्षण हेतु पूसा हाईड्रोजेल का उपयोग।
मक्का	➢ किस्म जे. एम. 216, जे. एम. –8 व जे. एम. 219 । ➢ कार्बोक्सिन + थायरम 3 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा. बीजोपचार। ➢ 50 प्रतिशत नत्रजन + पूरी फास्फोरस पूरी पोटाश व शेष नत्रजन दो बार खडी फसल में पर्णीय छिडकाव	➢ संकर मक्का – गेहूँ। ➢ खरीफ प्याज। ➢ 25 प्रतिशत बीज दर को बढाना।	➢ नत्रजन उर्वरक के उपयोग को रोक दे। ➢ इन सीटू नमी का संरक्षण। ➢ निंदाई – गुडाई। ➢ समय से खरपतवार प्रबन्धन।
गेंहूँ	➢ किस्म एम. पी. 1201, एम. पी. 1202, एच. आई. 8713, एच. आई. 1544 व जी. डब्लू. 322। ➢ अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का उपयोग। ➢ कान्तिक अवस्था पर सिंचाई । ➢ बीज सह उर्वरक मशीन से बुवाई।	➢ किस्म – एम.पी. 1203, जे. डब्लू. 17, एच. आई. 1531, एच. आई. 8627 व जी. डब्लू. 273। ➢ अनुशंसित मात्रा का 50 प्रतिशत एन. पी. के.। ➢ फब्बारा विधि से सिंचाई। ➢ बीज सह उर्वरक मशीन से बुवाई।	➢ मृदा नमी सूचकांक का उपयोग कर सिंचाई ➢ किस्म : एम. पी. 3020, जे. डब्लू. 17 व एच. आई. 1500। ➢ 2 प्रतिशत डी. ए. पी. का पर्णीय छिडकाव। ➢ हाइड्रोजेल का उपयोग

फसल का नाम	सामान्य मौसम	देर से मानसून	सूखा/फसल अवस्था में सूखा
चना	➢ किस्म – आर. वी. जी. 202, जे. जी. 16, जे. जी. 11, जे. जी. 130, पी. के. वी. 4, काक – 2। ➢ अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का उपयोग। ➢ कार्बोक्सिन + थायरम 3 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा. बीजोपचार। ➢ पुष्पन पूर्व व फली बनते समय सिंचाई।	➢ किस्म : जे. जी. 16, जे. जी. 14। ➢ अनुशंसित उर्वरक एन. पी. के. की 50 प्रतिशत मात्रा। ➢ कार्बोक्सिन + थायरम 3 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा. बीजोपचार। ➢ पट्टी/फब्बारा विधि से सिंचाई। ➢ बीज सह उर्वरक मशीन से बुवाई।	➢ किस्म : जे. जी. 14व जे. जी. 315। ➢ 2 प्रतिशत डी. ए. पी. का पर्णीय छिडकाव। ➢ फब्बारा विधि से सिंचाई। ➢ कार्बोक्सिन + थायरम 3 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा. बीजोपचार। ➢ हाइड्रोजेल का उपयोग।
उद्यानिकी फसलें :-			
फल वृक्ष	➢ समय पर रोपण कार्य। ➢ समन्वित पोषक तत्व प्रबन्धन। ➢ ड्रिप पद्धति से सिचांई।	➢ पोषक तत्वों का उपयोग देरी से। ➢ रोपण कार्य देरी से। ➢ थाला या टपक सिंचाई नियमित अन्तराल में। ➢ पलवार का उपयोग।	➢ टपक सिंचाई। ➢ पलवार का उपयोग। ➢ निंदाई – गुडाई।
सब्जियॉ	➢ मध्यम व लम्बी अवधि की किस्मों का उपयोग। ➢ संतुलित पोषक तत्व प्रबन्धन। ➢ प्लास्टिक मल्च का उपयोग। ➢ सूक्ष्म सिंचाई तकनीकी का उपयोग।	➢ कम अवधि की किस्मों का उपयोग। ➢ समन्वित पोषक तत्व प्रबन्धन। ➢ फब्बारा/ड्रिप सिंचाई। ➢ इन सीटू पलवार।	➢ 2 प्रतिशत डी. ए. पी. का पर्णीय छिडकाव। ➢ फब्बारा सिंचाई। ➢ इन सीटू पलवार। ➢ प्लास्टिक मल्च का उपयोग। ➢ प्लग ट्रे द्वारा पौध तैयार करना ।
पशुपालन	➢ वर्षभर हरा चारा उत्पादन कर पशुओं को खिलायें। ➢ अजौला का पशु आहार में उपयोग। ➢ स्वच्छ पानी को पीने हेतु उपयोग। ➢ समय से डीवर्मिंग व टीकाकरण। ➢ संतुलित आहार प्रबन्धन।	➢ स्वच्छ जल का उपयोग करें। ➢ संरक्षित चारे का उपयोग करें। ➢ टीकाकरण व डीवर्मिंग अवश्य करायें। ➢ पेयजल को बिना बुझे चूने से उपचारित करें। ➢ अजौला का पशु आहार में उपयोग।	➢ हे/साइलेज का उपयोग करें। ➢ टीकाकरण व डीवर्मिंग अवश्य करायें। ➢ पेयजल का बिना बुझे चूने से उपचार करें। ➢ इलेक्ट्रोलाईट का उपयोग करें। ➢ अजौला का पशु आहार में उपयोग।
मत्स्य पालन	➢ संतुलित आहार प्रबंधन।	➢ जल स्तर को तालाब मे बनायें रखना।	➢ जल स्तर बनायें रखने हेतु भूमिगत जल का उपयोग करें।
मुर्गीपालन	➢ संतुलित आहार प्रबंधन।	➢ टीकाकरण व डीवर्मिंग करें। ➢ दानों का सुरक्षित भण्डारण। ➢ द्विकाजी नस्लों का पालन।	➢ स्थानीय स्तर पर दानों का भण्डारण करें। ➢ पेयजल को बिना बुझे चूने से उपचारित करें। ➢ टीकाकरण व डीवर्मिंग करें। ➢ इलेक्ट्रोलाईट 1 ग्राम/02 ली. पानी में दें।

भाकृअनुप ICAR

सी. आर. डी. ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियॉ, जिला - सीहोर (म. प्र.) CRDE

फोन : 07561-281834, ई-मेल : crdekvksehore@gmail.com, Web Site: www.kvksehore.nic.in